बुद्धवर्ष २५५१, अधिक ज्येष्ठ पूर्णिमा, १ जून, २००७ वर्ष ३६ अंक १२

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

For Patrika in various languages, visit: **www.vri.dhamma.org/newsletters**

धम्मवाणी

सुखा मत्तेय्यता लोके, अथो पेत्तेय्यता सुखा।
सुखा सामञ्ञता लोके, अथो ब्रह्मञ्ञता सुखा॥

धम्मपद ३३२, नागवग्गो

लोक में माता की सेवा करना सुखकर है, (और) ऐसे ही पिता की सेवा (भी) सुखकर है। लोक में श्रमण की सेवा (आदर) करना सुखकर है, और (ऐसे ही) ब्राह्मण की सेवा (आदर) करना भी सुखकर है।

(कुछ ऐतिहासिक घटनाएं)

महासाल ब्राह्मण

भगवान के जीवन काल में –

एक अत्यंत धनी ब्राह्मण था। उन दिनों महाधनी को महासाल कहा जाता था। यह ब्राह्मण भी महासाल कहलाता था। वह महासाल ब्राह्मण के नाम से प्रसिद्ध हुआ और इतिहास भी उसे इसी नाम से जानता है। उसका वास्तविक नाम काल-प्रवाह में विलुप्त हो गया।

महासाल ब्राह्मण के चार पुत्र थे। उन्हें पालपोस कर, विवाह करके, व्यापार-धंधे में लगा कर, अपना आधा धन उन्हें बराबर हिस्सों में बांट कर दे दिया। स्वयं अपनी ब्राह्मणी के साथ अलग रहने लगा। कुछ वर्षों बाद ब्राह्मणी का निधन हो गया। तब वह अपने पुत्रों के पास रहने लगा। कभी एक के पास तो कभी दूसरे के पास। सभी लड़के पिता को अपने यहां रखने के लिए लालायित रहते। उन्हें उसके पास बचा हुआ धन दीखता। इसी कारण प्रत्येक पुत्र चाहता था कि पिता अधिक से अधिक समय उसी के पास रहे ताकि वह पिता की खूब सेवा-सुश्रुसा कर सके। जब वह कई दिनों तक एक के घर में रहता तब दूसरे उसे उलाहना देते कि आपको तो वही पुत्र अच्छा लगता है। उसी के यहां कई दिनों तक रहना चाहते हैं। यों मान-मनुहार में, सेवा-सुश्रुसा में पिता के दिन आराम से गुजर रहे थे।

पुत्रों को भय था कि धन के बल पर कहीं यह दूसरा विवाह न कर ले। अन्यथा नई पत्नी से इसे जो संतान प्राप्त होगी वह हमें मिलने वाली वसीयत में भागीदार बन जायगी। अतः उन चारों ने बूढ़े पिता को झांसा दिया कि आखिर हम आपकी पूरी देखभाल कर ही रहे हैं, सेवा कर ही रहे हैं और सारे जीवन करते ही रहेंगे। अतः आप धन का यह बोझ क्यों उठाए हुए हैं। आपको इसकी सुरक्षा को लेकर कितनी चिंता बनी रहती है। इसे हम चारों को बांट दें और चिंतामुक्त हो जायँ। बूढ़ा उनके बहकावे में आ गया और सारा धन चारों में बराबर-बराबर बांट दिया।

इसके बाद कुछ दिनों तक तो सेवा चलती रही। फिर बूढ़ा बाप बच्चों को भारी लगने लगा। वह जिस घर में रहता, वहां पहले जो आवभगत होती थी, सम्मान होता था, उसकी जगह अब दुत्कार और अपमान होने लगा। एक-एक कर चारों बहुओं ने उसे घर से यह कह कर निकाल दिया कि तुम्हारी देखभाल की सारी जिम्मेदारी क्या मेरी ही है?

अब बूढ़े के पास न रहने को घर, न खाने का ठिकाना, और न रोग निवारण के लिए औषधियां। वह अब घर से बेघर होकर असहाय हो गया। अपने बेटों की बदनामी न हो, इसलिए किसी से फटे-पुराने पीले वस्त्र मांग कर, उन्हें पहन-ओढ़ कर घर-घर भीख मांगने लगा। पीले वस्त्र इसलिए पहने कि लोग इस भ्रम में रहें कि इसने पांडुरंग प्रव्रज्या ले ली है। इसलिए घर-घर भीख मांग रहा है। परंतु अत्यंत दीन अवस्था में दिन-पर-दिन उसका स्वास्थ्य बिगड़ता गया।

इस दुरावस्था में एक दिन वह भगवान बुद्ध के जेतवन विहार गया। फटे-पुराने चीथड़े पहने हुए और दुर्बलता से कांपते हुए महासाल ब्राह्मण को भगवान ने पहचान लिया और उससे पूछा कि उसकी ऐसी दशा कैसे हुई? ब्राह्मण ने अपनी आपबीती कह सुनाई। उसने कहा कि जिन पुत्रों के जन्म लेने पर वह खुशियां मनाता और जिनका पालन-पोषण करते हुए प्रसन्न हुआ करता था, जिन पर विश्वास करके उन्हें अपना सारा धन बांट दिया, अब उन्होंने मुझे दुत्कार कर घर से बाहर निकाल दिया।

भगवान ने करुणचित्त से कहा कि जहां कहीं ब्राह्मण समाज की सभा होती हो और उसमें तुम्हारे पुत्र भी उपस्थित हों, वहां अपनी दुर्दशा का बखान करते हुए यह दर्दनाक कविता सुनाना। तुम्हारी समस्या का समाधान हो जायगा। यह कह भगवान ने उसे एक कविता सुनाई।

उन दिनों की जनता में यह कठोर नियम था कि संपन्न होते हुए भी जो पुत्र अपने माता-पिता की उचित देखभाल न करें, उसे

मृत्युदंड दिया जाय। राज्य की ओर से भी यह नियम स्वीकृत था। बूढ़ा अपने पुत्रों की मृत्यु नहीं चाहता था। इसलिए वह प्रव्रज्या का ढोंग करके भीख मांगा करता था। भगवान के सुझाव से वह घबराया, परंतु भगवान ने आश्वासन दिया कि सब ठीक हो जायगा।

महासाल ब्राह्मण वहां पहुँचा, जहां ब्राह्मण समाज की पंचायत बैठी थी और वहां उसके चारों बेटे भी बैठे थे। बूढ़े ब्राह्मण ने वहां पहुँच कर भगवान की दी हुई दर्दनाक कविता पढ़ सुनाई। लोगों को उसके पुत्रों पर क्रोध आया और इसके पहले कि वे मृत्युदंड की घोषणा करते, चारों पुत्रों ने पिता के पैर पकड़कर जीवनदान की भीख मांगी और भरी सभा में आश्वासन दिया कि अब वे बूढ़े पिता की पूरी देखभाल करेंगे।

बाप तो बाप होता है। उसने ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि उसके पुत्रों को मृत्युदंड न दें। वे अब बदल चुके हैं। पुत्र उसे घर ले गये और ठीक से सेवा करने लगे। पिता भी प्रसन्न हुआ।

भगवान वीतराग थे, वीतद्वेष थे, स्थितप्रज्ञ थे, अरहंत थे, सम्यक सम्बुद्ध थे। **"अद्वेष्टा सर्वभूतानां, मैत्रः करुण एव च"** का जीवन जीते थे। अतः जहां आवश्यक होता वहां खूब मैत्री और करुणा के साथ कठोरता का व्यवहार भी करते और करवाते थे। परिणाम सदा अच्छा ही हुआ करता था।

इस घटना से प्रेरित साधक कर्तव्यपरायण होकर धर्मपथ पर चलते हुए अपना भी मंगल साधें तथा औरों के भी मंगल में सहायक बन जायँ।

मंगल मित्र,

स. ना. गो.

धम्मतपोवन- क्रमांक २ का निर्माणकार्य

धम्मतपोवन-१ का निर्माण सन २००० में हुआ और तब से वहां लगातार, २०-दिवसीय, ३०-दिवसीय, ४५-दिवसीय, ६०-दिवसीय तथा अन्य विशिष्ट शिविरों का आयोजन होता आ रहा है। ये सभी शिविर सदैव भरे रहते हैं और स्थानाभाव के कारण अनेक शिविरार्थिओं को 'ना' कहना पड़ता है। परंतु वर्तमान केंद्र के विस्तार की संभावना नहीं है। इसलिए निर्णय किया गया कि ऐसे ही एक अन्य केंद्र का निर्माण हो जहां अधिक संख्या में शिविरार्थियों की सेवा की जा सके।

इस कारण धम्मतपोवन-१ के समीप ही धम्मतपोवन-२ का निर्माणकार्य आरंभ किया गया। आवश्यकतानुसार आस-पास की जमीन खरीदी गयी और कुछ जमीन कुछ पुराने साधकों से दान स्वरूप प्राप्त हुई। इसका निर्माणकार्य बहुत तीव्रगति से चल रहा है।

वर्तमान में ध्यानकक्ष और पक्की सीमा-दीवाल का कार्य पूर्ण हो चुका है। पगोडा का कार्य प्रगति पर है। इसका भी कंक्रीट-वर्क पूरा हो चुका है। शेष काम पूरा करना है।

१. शून्यागारों के निर्माण का काम चालू है। इसे पूरा करना है।

२. १२५ साधकों के लायक निवासादि तैयार करने हैं, फिलहाल ५० निवास के लिए नींव भरी जा रही है।

३. भोजनकक्ष, रसोईघर, आचार्य निवास, पुरुष-महिला सहायक आचार्यों के निवास तथा धर्मसेवक-सेविका निवासादि का काम अभी आरंभ करना है।

४. गर्म-ठंडे पानी-पूर्ति की सुविधा, सेप्टिक टैंक, मलवाहिनी पाइप, बिजली आपूर्ति, सड़कें और सड़कों पर प्रकाश-व्यवस्था, टेलीफोन लाइन आदि लगनी आवश्यक है।

इन सब का कुल खर्च कई लाख आयेगा। जो भी साधक-साधिकाएंचाहें, धर्मदान के इस महान पुण्य में भागीदार बन सकते हैं।

सब का मंगल हो!

धम्मसोभा (श्रीलंका) का पहला शिविर

प्रसन्नता का विषय है कि कोलंबो के समीप स्थित कोसगामा के नए विपश्यना केंद्र 'धम्मसोभा' का पहला शिविर २९ मार्च से ९ अप्रेल, २००७ तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यद्यपि निर्माणाधीन इस केंद्र पर अभी प्राथमिक सुविधाएं भी ठीक से उपलब्ध नहीं हैं, फिर भी कठिनाई के बावजूद धम्मानुभाव से उपासक-उपासिकाओं के अतिरिक्त भिक्षु और भिक्षुणियों सहित कुल ८० साधकों ने धर्मलाभ प्राप्त किया।

एक ऊंची तीव्र ढाल वाली पहाड़ी पर स्थित इस केंद्र का निर्माणकार्य पूज्य गुरुदेव की गत मई, २००६ में श्रीलंका सरकार द्वारा भगवान बुद्ध की २५५०वीं जयंती के अवसर पर आमंत्रित यात्रा के मात्र दो माह पूर्व आरंभ हुआ। पानी आदि की सुविधाओं के साथ किसी दानी साधक ने आचार्य-निवास तैयार करवा दिया था। इस प्रकार यात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेव कुछ समय वहां ठहर सके। उसी दिन यहां टेंट और नारियल-पत्तों की छप्परें लगा कर हजार से अधिक साधकों का एक-दिवसीय शिविर लगवाया गया था, जिन्हें मैत्री देने के साथ पूज्य गुरुदेव ने साधकों और यात्रियों को अलग-अलग संबोधित किया था।

तदनंतर यहां अनवरत निर्माणकार्य चलता रहा और लगभग १२० साधकों के लिए ध्यान-कक्ष सहित एक चार मंजिली इमारत का निर्माणकार्य चल रहा है। इसमें रसोईघर, भोजनालय, धर्मसेवकों के निवास के साथ पुरुष साधकों के लिए निवास बन रहा है, जिसका एक तिहाई कार्य होना अभी शेष है। साठ महिलाओं के लिए अलग निवास बन रहा है जो लगभग पूर्णता को पहुँच रहा है।

ऐसे में जब ८० लोगों का शिविर आरंभ हुआ तो शिविर के पहले ही दिन कहीं जमीन में दबी पानी की पाइप से पानी लीक हो जाने के कारण प्रातः लगभग ८०,००० लीटर की टंकी पूरी रिक्त हो चुकी थी। उसी रात चक्रवाती तेज वर्षा और तूफान ने

नये उत्तरदायित्व

आचार्य

१. डॉ. एन. पी. सुब्रमणियम, सिकंदराबाद
धम्माराम, भीमावरम की सेवा

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री अरुण सूर्यवंशी, नाशिक
धम्मसरोवर, धुले की सेवा में क्षेत्रीय आचार्य की सहायता

2. Mr. Carl Franz & Mrs. Lorena Havens, *USA*

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

आचार्य

१-२. डॉ. हमीर एवं डॉ. (श्रीमती) निर्मला गानला, पुणे
सहायक आचार्य प्रशिक्षण में प्रो. प्यारेलाल धर की सहायता

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. Ms. Mirjam Berns, *Venezuela*
To assist the area teacher in serving Dhamma Veṇuvana, Venezuela

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. Ms. Tamar Apel, *Israel*
2-3. Mr. John Geraets & Mrs. Karen Weston, *New Zealand*

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती शैलजा सुरेश खाडे, नाशिक
२. सुश्री सोनाली चं. रोकडे, नाशिक
३. श्री कार्तिक जे. केलैया, राजकोट
४. श्री अशोक हमीरभाई भुवा, अमरेली
५. श्रीमती पूनम भरतकुमार सितपारा, राजकोट
६-७. श्री मोहनलाल एवं श्रीमती पुष्पादेवी केडिया, जयपुर
८. श्री माधव प्रसाद ढुंगना, नेपाल
९. श्री अर्जुन गिरि, नेपाल
१०. श्री बुद्धि बहादुर गुरुंग, नेपाल
११. श्रीमती रेणु कर्ण, नेपाल
१२. श्री अमृत खाडका, नेपाल
१३. श्री राम प्रसाद पांडे, नेपाल
१४. श्री श्याम कृष्ण महर्जन, नेपाल
१५. श्रीमती तारा पोखरेल, नेपाल
१६. श्री उपेंद्र सपकोटा, नेपाल
१७. श्री महेश्वर मान शाक्य, नेपाल
१८. श्रीमती शारदा शर्मा, नेपाल
19. Mr. Torquil Cameron. *Australia*
20. Mr. Christan Tietz, *Australia*
21. Mr. Philippe Meret, *France*
22. Ms. Beate Diekhof, *Germany*
23. Mr. Marcus Brehm, *Germany*

महिला-निवास की छतें भी तोड़ दीं। खिड़की-दरवाजे विहीन कमरों से पानी निकालने और भीगे हुए गद्दों को सुखाने में धर्मसेवकोंऔर निर्माणकर्मियोंने अनवरत परिश्रम किया।पहाड़ी पर होने के कारण यहां तक बड़ी मुश्किल से १०,००० लीटर पानी ट्रकोंसे पहुँचाया गया। तीसरे दिन दोपहर बाद ही नलों में पानी आया। फिरभीसाधक-साधिकाओंने धैर्य बनाये रखा और अपने काम में लगे रहे।

श्रीलंकामें वर्षों से जारी खूनी संघर्ष से आहत लोग धर्म की शरण को ही सर्वोत्तम शरण समझते हैं। यात्रा के दौरान पूज्य गुरुदेव ने अपने धर्म-प्रवचनों में बार-बार यही दोहराया कि इस धर्मदेश काकल्याणधर्ममार्ग पर चलने से ही होगा। इसलिए पहले से ही यहां शिविरों की तीव्र मांग है।

तेज ढाल के कारण स्थान को निर्माण योग्य बनाने में ही बहुत-सा धन लग गया। स्थाई शौंचालय आदि सहित बचे हुए निर्माणकार्यको पूरा करनेके लिए लाखों डालर की आवश्यकता है। जो भी साधक-साधिकाएंचाहें, धर्मदान के इस महान पुण्य में भागीदार बन सकते हैं।

संपर्क –The Treasurer

Dhamma Sobha Vipassana Meditation Centre,
No. 38 Pahala Kosgama, Kosgama, Sri Lanka
Tel: [94] 11-280-1183, [94] 36-225-3955

Email: dhammasobha@yahoo.com

सब का मंगल हो!

गुवाटेमाला (लातीनी अमेरिका) में पहला शिविर संपन्न

दक्षिण अमेरिकाके मध्य में स्थित गुवाटेमाला में जब कभी शिविर लगाने की चर्चा होती तो यह प्रसंग अवश्य उठता कि गुवाटेमाला को गौतम बुद्ध की धरती कहा जाता है। ऐसी संभावना व्यक्त कीजाती है कि गौतमालय से ही गोतेमाला और अब "गुवाटेमाला" बना। ऐसे में पूज्य गुरुदेव का निर्देश यही होता कि यहां विपश्यना शिविर अवश्य लगना चाहिए। अंततः गत २९ मार्च, २००७ को पहला शिविर लग ही गया।

शिविर में लगभग ७० साधकोंऔर धर्मसेवकोंको धर्मलाभ मिला। इसे जान कर पूज्य गुरुदेव को बहुत प्रसन्नता हुई। अब यहां अगला शिविर २६ दिसंबर को होना निश्चित हुआ है।

धर्मपथ पर सब का मंगल हो!

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ कीगयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टी.वी. पर **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियोंको विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

पूज्य गुरुजी का प्रवचन 'हंगामा' टी.वी. चैनल पर

प्रतिदिन प्रातः ४:३० से ६ बजे तक पूरा प्रवचन एक साथ प्रसारित कियाजा रहा है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों एवं परिजनों सहित इसका लाभ उठा सकतेहैं।

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे है।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03

मुंबई में बच्चों के शिविर

दिनांक	स्थान	पात्रता	पंजीकरण
१०-६	उल्हासनगर	१३ से १६ वर्ष	७ और ८-६
१०-६	अंधेरी	१० से १२ वर्ष	७ और ८-६
१७-६	घाटकोपर	१० से १२ वर्ष	१४ और १५-६
२४-६	माटुंगा	१३ से १६ वर्ष	२२ और २३-६
२४-६	JNPT	१० से १२ वर्ष	२२ और २३-६
१-७	दक्षिण मुंबई	१३ से १६ वर्ष	२८ और २९-६
८-७	उल्हासनगर	१० से १२ वर्ष	५ और ६-७
१५-७	घाटकोपर	१३ से १६ वर्ष	१२ और १३-७
२९-७	JNPT	१३ से १६ वर्ष	२७ और २८-७
५-८	दक्षिण मुंबई	१० से १२ वर्ष	२ और ३-८
१२-८	अंधेरी	१० से १२ वर्ष	८ और ९-८
१२-८	उल्हासनगर	१३ से १६ वर्ष	८ और ९-८
१९-८	घाटकोपर	१० से १२ वर्ष	१६ और १७-८
२६-८	माटुंगा	१३ से १६ वर्ष	२४ और २५-८
२-९	दक्षिण मुंबई	१३ से १६ वर्ष	३० और ३१-८
९-९	माटुंगा	१० से १२ वर्ष	६ और ७-९
९-९	उल्हासनगर	१० से १२ वर्ष	६ और ७-९
१६-९	घाटकोपर	१३ से १६ वर्ष	१३ और १४-९

शिविर कालावधिः सुबह ८:३० से दोपहर २:३० तक

पंजीकरण समयः विभिन्न स्थानों के दिये हुए फोनपर सुबह ११:०० से दोपहर १:०० बजे तक

नाम दर्ज कराने का समयःसुबह ११ से दोपहर १ बजे तक

(पूरा पता एवं विस्तृत विवरण कृपया **भावी शिविर कार्यक्रम** के अंतर्गत देखें।)

दोहे धर्म के

माता-पिता की वन्दना, गुरुजन का सत्कार।
समता होवे मित्र से, पत्नी से हो प्यार।
परिजन का पालन करे, करे दान उन्मुक्त।
सदा मुक्त ऋण से रहे, पावे सुख उपयुक्त॥
सद्गृहस्थ की संपदा, जन हितकारी होय।
कर दे दूर विपन्नता, मंगलकारी होय॥
हिंसा चोरी झूठ तज, गृहपति! तज व्यभिचार।
साध आंतरिक शांति सुख, कुशल लोक व्यवहार॥
मिथ्या यश निन्दा सुने, अविचल निर्भय होय।
डिगे नहीं सत्पंथ से, गृहपति सुखिया होय॥
हानि लाभ निन्दा सुयश, सुख दुख मान अपमान।
चित किंचित विचलित न हो, रहे धर्म का ज्ञान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

निज-संपद संतोस रख, मत पर-संपद देख।
सदा सुखी सद्गिरस्त री, या ही रीति अलेख॥
सील धरम पालण करै, करै न कूड़ा काम।
सिर नीचो होवै नहीं, हुवै नहीं बदनाम॥
दुस्करमां लज्जित हुवै, हुवै घणो अनुताप।
सत्करमां होवै सुखी, रवै दूर संताप॥
कुसल करम करतो रवै, दुस्करमां स्यूं दूर।
चित्त सोध सद्धरम स्यूं, सुख भोगै भरपूर॥
कुसल करम स्यूं सुख मिलै, कर कर बारंबार।
अकुसल करमां दुख जगै, कर मत बीजी बार॥
मां बापू री बंदगी, संतां रो सम्मान।
परिजन रो पोसण करै, ग्रिही रवै सुखवान॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोनः (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्सः (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५१, अधिक ज्येष्ठ पूर्णिमा, १ जून, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. **LII/REN/RNP-46/2006-08**

Licenced to post **without Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org